बारिश और बच्चों के अनुभव

मौखिक बातचीत का शैक्षिक महत्त्व

शिफ़ा ख़ान

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों से बातचीत को एक महत्त्वपूर्ण अवयव के तौर पर देखा जाता है। यदि बच्चों को किसी जाने-पहचाने विषय पर सुव्यवस्थित और सार्थक बातचीत के लिए प्रोत्साहित किया जाए तो उन्हें आत्मविश्वास से अपने अवलोकन व अनुभव साझा करने और उन्हें विस्तार देने के मौक़े मिलते हैं। इससे धीरे-धीरे न केवल बच्चों की अभिव्यक्ति का विस्तार होता है, उनके अवलोकन भी पैने होने लगते हैं। इस लेख में लेखिका ने बच्चों से 'बारिश के मौसम' पर एक ऐसी ही समृद्ध और दिलचस्प बातचीत के अनुभव प्रस्तुत किए हैं। -सं.

बच्चों से बातचीत करना मुझे शुरू से ही मज़ेदार लगता है। बच्चों से बातचीत करके ही मालूम होता है कि बच्चे कैसे अपने अनुभव गढ़ते हैं। दुनिया को देखने का उनका अपना ही नज़रिया होता है। वे अपने आसपास घट रही हर छोटी-से-छोटी चीज़ का बड़ी बारीक़ी से अवलोकन करते हैं और अपने अनुभव व तर्क बनाते हैं। ज़रूरत होती है उनको सुनने की, और उन्हें सोचने के लिए नई दिशा देने की।

जैसी स्कूली शिक्षा से हम सब निकलकर आए हैं और जो वर्तमान में प्रक्रियाएँ चल रही हैं, उनमें बच्चों के अनुभवों और तर्कों को सुनने की कोई जगह नहीं है। हर कक्षा के लिए कुछ तय पाठ्यक्रम होता है। उसके अन्तर्गत दिए गए पाठ और अभ्यासों को पूरा करने में ही पूरा साल और देखते-ही-देखते पूरी स्कूली शिक्षा ख़त्म हो जाती है। इस पूरी प्रक्रिया में बच्चों के ख़ुद के अनुभव और उनके आधार पर बनी समझ की कोई जगह नहीं होती, जबकि वे अपने साथ ख़ुद के अनुभवों का विशाल संसार लाते हैं। उनके कुछ अनुभव तो हम सबको अचम्भित भी कर देंगे। ऐसी ही एक बातचीत का ज़िक्र इस लेख में किया गया है जिसमें तीसरी से पाँचवीं कक्षा तक के बच्चे शामिल थे।

बच्चों से बातचीत के अनुभव

इस स्कूल में बच्चों के साथ काफ़ी समय से काम कर रही हूँ। एक बार कई दिनों की बारिश के बाद जब स्कूल जाना हुआ तो सोचा कि क्यों न आज बच्चों से उनके बारिश के अनुभवों पर कुछ बात की जाए!

शुरुआत ऐसे ही प्रश्न से हुई, "आजकल बहुत बारिश हो रही है। क्या तुम लोगों को पता है कि अभी इतनी बारिश क्यों हो रही है?"

बच्चों ने बताया कि अभी बरसात का मौसम चल रहा है इसलिए इतनी बारिश हो रही है। कुछ बच्चों ने यह भी बताया कि अभी सावन चल रहा है और इसमें बारिश होती है।

बच्चों के जवाब लेने के बाद मैंने उनसे पूछा, "ये मौसम आपको कैसा लगता है?" इसपर बच्चों के जवाब अलग-अलग थे। कुछ बच्चों ने बोला कि उन्हें ये मौसम पसन्द है, और कुछ ने कहा कि उन्हें यह अच्छा नहीं लगता। मैंने अगला प्रश्न

उनसे पूछा, "उन्हें ये मौसम पसन्द या नापसन्द क्यों है?" इसको लेकर उनके अपने-अपने खट्टे-मीठे अनुभव थे। कुछ बच्चों ने बताया कि ज़्यादा बारिश होने पर स्कूल नहीं आना पड़ता। बारिश में घर पर ही खेलते और साइकिल चलाते हैं, इसमें मज़ा आता है। कुछ ने बोला कि बारिश में घर में पानी भर जाता है और छप्पर से पानी चूने लगता है। इससे उनके बिस्तर, खाने का सामान, आदि ख़राब हो जाते हैं और गीला-गीला रहता है। एक बच्चे ने कहा, "मुझे रात में बारिश बिलकुल भी पसन्द नहीं, क्योंकि रात में फिर सबको जागना पड़ता है और घर में भरा पानी बार-बार बाहर निकालना पड़ता है।" ऐसे ही कई कारणों के चलते बहुत-से बच्चों को ये मौसम पसन्द नहीं है।

बच्चों के ये जवाब मेरे लिए काफ़ी सोचने वाले थे कि बारिश को नापसन्द करने के कुछ ऐसे कारण भी हो सकते हैं जो बच्चों से इस तरह जुड़ते हैं।

बच्चों के मत जानने के बाद मैंने बारिश के मौसम से जुड़े उनके कुछ और अनुभव जानने की कोशिश की। मैंने इस मौसम के दौरान अपने आसपास दिखने वाले बदलावों के बारे में उनसे पूछा। बच्चों के जवाब आते गए, और मैंने बोर्ड पर उन्हें लिखना शुरू कर दिया। देखते-ही-देखते बच्चों के अनुभवों से पूरा बोर्ड भर गया। कुछ अनुभव बड़े ही रोचक थे। इनपर और बातचीत करके बच्चों के सोचने और उनके ऐसा बताने की वजह पर और गहराई से सोचा जा सकता है। इन्हीं में से कुछ अनुभव इस प्रकार हैं–

1. बरसात के मौसम में हमें सर्दी और बुख़ार होता है।

तीसरी कक्षा की एक बच्ची ने बताया, "मैडम, बारिश में हम भीगते हैं जिससे हमें सर्दी हो जाती है और बुख़ार भी आ जाता है। मम्मी मना भी करती है कि बारिश में मत भीगो, नहीं तो बीमार हो जाओगे।" बाक़ी बच्चों ने भी सहमति भरी कि उन्हें भी बारिश में भीगने से मना किया जाता है। कुछ बच्चे बोले, "पर हमें तो बारिश में नहाने में बहुत मज़ा आता है और हम बारिश में साइकिल भी चलाते हैं।" मैंने और जानने के लिए पूछा, "अच्छा, ऐसा क्यों होता होगा कि इस मौसम में सर्दी और बुख़ार आता है?" इसपर बच्चे सोचने लगे। कुछ समय लेने के बाद एक बच्चा बोला, "पानी ठण्डा होता है तो उसमें नहाने से सर्दी और बुख़ार हो जाता है।" बाक़ी बच्चे भी अपने साथी के इस तर्क से सहमत लगे। एक-दो जवाब ये भी आए कि बारिश होने से मौसम ठण्डा हो जाता है। चौथी कक्षा के एक छात्र ने बताया, "बारिश के बाद पीने का पानी भी मटमैला आता है। उसमें मिट्टी मिल जाती है और फिर गन्दा पानी पीने से हम बीमार हो जाते हैं।"

बच्चों से बातचीत का ये अनुभव मेरे लिए कुछ नया था, क्योंकि मैंने कभी नहीं सोचा था कि बच्चे इतना कुछ जानते होंगे और बोलेंगे। भले ही वो बारिश के मौसम में ज़्यादा बीमार होने के वैज्ञानिक कारण को न जानते हों, पर मेरी नज़र में उनका ये अवलोकन काफ़ी सराहनीय है। एक बात और जो समझने वाली

चित्र : ख़ुशी जाटव, कक्षा 4

थी कि बच्चे गन्दा पानी पीने और उसके कारण बीमार होने के सम्बन्ध को भी देख पा रहे थे।

2. इन्द्रधनुष निकलता है।

ज़्यादातर बच्चों ने बताया कि उन्होंने बरसात के मौसम में आसमान में इन्द्रधनुष बनते देखा है। मैंने पूछा, "क्या जब बारिश होती है तब हर बार इन्द्रधनुष दिखाई देता है?" इसपर सभी बच्चों का जवाब 'न' में था। एक बच्चा तपाक से बोला, "मैडमजी, जब बारिश और धूप साथ में होती है तब इन्द्रधनुष बनता है।" बच्चों से यह भी जानने को मिला कि जब धूप और बारिश एक साथ होती है तो ऐसा बोला जाता है कि लड़इयों की शादी हो रही है और इन्द्रधनुष निकलेगा।

एक बच्चे ने बताया, "जब थोड़ी-थोड़ी बारिश होती है और धूप निकल आती है, तब इन्द्रधनुष निकलता है।" बाक़ी बच्चों का भी यही मत था कि इन्द्रधनुष बनने के लिए बारिश और धूप ज़रूरी हैं। इसपर बच्चों के और अनुभव जानने के लिए मैंने आगे पूछा, "इन्द्रधनुष में कितने रंग होते हैं?" कुछ बच्चे सोच में पड़ गए, और कुछ ने 4, कुछ ने 6, तो किसी ने 3 रंग बोला। बच्चों को और कन्फ़्यूज़ करने के लिए हमारे साथ ही काम कर रही शिक्षिका हँसते हुए बोलीं, "अच्छा! पर मैंने तो इन्द्रधनुष में 12 रंग देखे हैं।" शिक्षिका की बात सुनकर सभी बच्चे हँसने लगे।

चित्र : संदीप पटेल, कक्षा 4

थोड़ा और जानने के लिए मैंने बच्चों से फिर पूछा, "अच्छा, अब ठीक से याद करके बताओ, इन्द्रधनुष में तुम्हें कितने रंग दिखाई देते हैं?"

इस बार बच्चों के उत्तर 3 और 4 रंग पर आकर अटक गए। मैंने बच्चों से पूछा, "वो रंग कौन-कौन से होते हैं?" उन्होंने बताया, "गुलाबी, नीला, नारंगी और पीला।"

ख़ैर, आज की चर्चा का उद्देश्य ये तो था नहीं कि मैं उन्हें बता दूँ कि इन्द्रधनुष में 3 या 4 नहीं, 7 रंग होते हैं। मैंने उन्हें बोला कि अब जब भी इन्द्रधनुष निकले तो अपनी-अपनी कॉपी में उसे बनाना और तब देखना कि उसमें कितने रंग दिख रहे हैं। सभी बच्चों को ये टास्क काफ़ी अच्छा लगा। उन्होंने बोला कि अब वो उसे ठीक से देखेंगे।

अगर आप अच्छे से ग़ौर करेंगे, तो पाएँगे कि हमें भी अगर कक्षा में या किताबों से ये नहीं बताया जाता कि इन्द्रधनुष में 7 रंग होते हैं, तो हम भी बच्चों की ही तरह जवाब दे रहे होते। इन्द्रधनुष जब भी दिखाई देता है तो उसके सभी 7 रंग बहुत साफ़-साफ़ नहीं समझ आते, क्योंकि वे एक दूसरे में काफ़ी मिले हुए होते हैं। शायद अब वो उसे और गहराई से देखने का प्रयास करें, क्योंकि इस बातचीत से वे यह तो समझ पाए थे कि 3 या 4 रंग वाले उत्तर में अभी सुधार की गुंजाइश है।

3. मोर नाचता है।

तीसरी कक्षा की एक लड़की ने यह बात बताई कि जब बारिश होती है तभी मोर भी नाचता है। इसपर मैंने उससे पूछा, "क्या उसने कभी ऐसा देखा है?" बच्ची ने बताया कि वो एक बार बारिश के मौसम में अपनी नानी के घर गई थी, तब उसने देखा था कि खेत में मोर नाच रहा था। उसकी नानी ने उसे बताया था कि जब बारिश होती है तो मोर भी नाचता है। अन्य बच्चों से पूछने पर पता चला कि उन्होंने मोर तो देखा है, पर उसे कभी बारिश में नाचते हुए नहीं देखा। हाँ, उन्होंने

सुना ज़रूर है कि मोर बारिश में नाचता है। साथ ही उनकी पाठ्यपुस्तक में दी गई कविता में भी यह बताया गया है कि बारिश में मोर नाचता है। एक बच्चे ने इसी बात पर एक अनुभव जोड़ा कि मोबाइल में यू-ट्यूब पर उसने एक कविता सुनी थी, उसमें भी बारिश में मोर नाच रहा था।

4. बिजली चमकती है, बिजली गिरती है।

काफ़ी बच्चों से यह बात निकलकर आई कि जब बारिश होती है, आकाश में बिजली भी चमकती है। कुछ बच्चों ने बताया कि कभी-कभी बिजली ज़मीन पर भी गिर जाती है। इस विषय में बच्चों के और अनुभव जानने के लिए मैंने उनसे पूछा, "बिजली कैसे चमकती है?" बच्चों के जवाब इस प्रकार थे–

- बादल में बिजली लाइट जैसी दिखती है।
- उसमें आग होती है।
- जिसपर बिजली गिरती है वो जल जाता है।
- जब बिजली चमकती है तब बहुत तेज़ आवाज़ भी आती है।

बातचीत में यह भी निकलकर आया कि बिजली पेड़ पर गिरती है जिससे पेड़ जल जाता है। एक बच्चे ने तो पूरा क़िस्सा ही सुनाया, "एक बार तेज़ बारिश हो रही थी और गाँव के पीछे वाले जंगल के एक पेड़ पर बिजली गिर गई थी। तब बहुत तेज़ आवाज़ आई थी। घर पर सब बोल रहे थे कि कहीं आसपास बिजली गिरी है। जब बारिश हल्की हुई तो हमने देखा कि जंगल के पेड़ में आग लगी थी। वह पूरा जलकर काला हो गया था और बहुत धुआँ निकल रहा था।" कुछ बच्चों ने इसी बात पर ये भी बताया कि जब बारिश होती है तो पेड़ के नीचे खड़े नहीं होना चाहिए। एक बच्चे ने इसी घटना से जुड़ी एक ख़बर भी बता दी कि पिछली बार बारिश में जब एक लड़का अपने खेत में पेड़ के नीचे खड़ा था, उसके ऊपर बिजली गिर गई थी। वो बहुत बुरी तरह से जल गया था और उसे बचाया नहीं जा सका। बाक़ी बच्चों ने भी इस घटना को याद करके अपने-अपने अनुभव जोड़े। चूँकि ये घटना पास ही के गाँव में हुई थी तो सभी बच्चे इससे वाक़िफ़ थे।

5. बादल काले हो जाते हैं।

बच्चों ने ये भी बताया कि जब बारिश होती है तब बादल काले रंग के होते हैं। जब उनसे इसपर और बात की गई कि बारिश के समय बादल काले क्यों हो जाते हैं, तो बच्चों ने काफ़ी सोचा, पर ज़्यादा जवाब नहीं आए। केवल एक-दो ही बोले कि अँधेरा हो जाता है जिससे बादल काले हो जाते हैं। एक बच्चे ने बताया कि उनमें पानी होता है जिससे वो काले हो जाते हैं।

शुरुआती स्तर पर अगर वो ये अनुभव कर पा रहे हैं कि बारिश में बादलों का रंग सफ़ेद न होकर काला होता है तो ये भी बहुत अच्छा अवलोकन है। अगर उन्हें ऐसे ही मौक़े आगे भी मिलें तो शायद आने वाली कक्षाओं में वो इन परिवर्तनों के जवाब खोज पाएँगे।

6. कीड़े-मकोड़े और साँप निकल आते हैं।

चित्र : ऋषभ अहिरवार, कक्षा 4

इस बिन्दु पर बच्चों के बहुत अनोखे-अनोखे अनुभव थे। कुछ बच्चों की तरफ़ से आया कि बारिश के मौसम में कई कीड़े-मकोड़े और साँप बाहर निकल आते हैं। जब इसपर और पूछा गया

तो बच्चों ने बताया कि कीड़े-मकोड़े और साँप मिट्टी में बिल बनाकर रहते हैं। बारिश होने की वजह से उनके बिलों में पानी भर जाता है तो वो बाहर निकल आते हैं। एक बच्चे ने बताया कि एक बार जब वो अपनी भाभी के घर गया था और बारिश हो रही थी तभी एक कछुआ भी निकलकर आ गया था। इतना सुनते ही नमन भी बोल उठा, "मैडम, बड़े बाबाजी के मन्दिर में भी एक कछुआ है जो 13 साल का है। वो वहीं कुएँ में रहता है।" इतना सुनते ही मैडम ने उसे रोक दिया और कहा, "तुमसे बारिश की बात हो रही है या कछुए की!" नमन थोड़ा झेंप गया और चुप हो गया।

ये जो भी बातें बच्चों ने बताईं, बेहद रोचक और सोचने वाली थीं। यहाँ मैं ये जानना चाहती थी कि नमन को कैसे पता चला कि कछुए की उम्र 13 साल ही है। पर शायद शिक्षिका को यहाँ हो रही बारिश की चर्चा से कुछ भटकाव लगा, जिसके चलते उन्होंने उसे टोक दिया। अगर यहाँ उसे टोका न जाता तो हम उस कछुए से जुड़े नमन के कुछ अनुभव और जान पाते। ख़ैर, इसपर नमन से आगे अलग से बात करूँगी।

चित्र : अनिकेत अहिरवार, कक्षा 4

यहाँ समझने वाली बात यह है कि कभी-कभी बच्चे ऐसे अनुभव भी लाते हैं जिनपर हमें लग सकता है कि वो मुद्दे से हट रहे हैं। हमें थोड़ा उन्हें भी सुनना चाहिए ताकि बच्चों को को ये अहसास दिला सकें कि उन छोटी-छोटी चीज़ों का भी महत्त्व है, जो वो अपने आसपास सुन और देख रहे हैं। ख़ैर, जैसा कि होता है, नमन भी शिक्षिका के टोकने वाले व्यवहार से थोड़ा शान्त हो गया और शायद समझ गया कि सिर्फ़ बारिश पर ही बोलना है। कछुआ, मेंढक, शायद इस चर्चा का हिस्सा नहीं हैं। यहाँ पर मुझे लगा कि यह थोड़ा ग़लत था, क्योंकि बारिश की चर्चा से ही उसके मन में कछुए का ख़्याल आया। दूसरा, इस कक्षा का मुख्य फ़ोकस ही बच्चों से बातचीत करना था।

7. कुआँ और झिरिया भर जाते हैं।

बच्चों से बातचीत में ये बात सामने आई कि बरसात के मौसम में उनके गाँव के आसपास के नाले चढ़ (ओवरफ़्लो हो) जाते हैं। इसके साथ ही, उनके घर और खेतों में बने कुओं और झिरियों में भी पानी भर जाता है। मेरे लिए 'झिरिया' शब्द नया था। कुछ बच्चे बोल रहे थे कि उनके कुओं में पानी भर जाता है तो कुछ अपनी झिरिया का बता रहे थे। मैंने जिज्ञासावश पूछ ही लिया, "ये झिरिया क्या होता है? क्या कुएँ को ही झिरिया बोलते हैं?"

बच्चे पहले तो हँसने लगे, फिर उन्हीं में से एक बच्चा बोला, "मैडम, कुआँ और झिरिया अलग-अलग होते हैं। कुआँ चौड़ा होता है और उसके चारों ओर पक्की मेड़ जैसी बनी होती है, जबकि झिरिया सँकरी होती है। झिरिया में बारिश का और झिर से आने वाला पानी जमा करके उसे इस्तेमाल करते हैं। गर्मी में झिरिया का पानी सूख जाता है, पर कुएँ में पानी बना रहता है। कुएँ के पानी का उपयोग हम पीने के लिए करते हैं, जबकि झिरिया का पानी सिंचाई या घरेलू कामकाज के लिए उपयोग में लिया जाता है।"

आगे बच्चों से मैंने पूछा, "कुएँ और झिरिया में बारिश के अलावा और कहाँ से पानी आता है?" बच्चों ने बताया कि पानी ज़मीन से पत्थरों के बीच से आता है। कक्षा 4 और 5 के कुछ बच्चों ने बताया कि मिट्टी बारिश का पानी सोख लेती है। फिर यही पानी झिरियों और कुओं में पत्थरों के बीच से निकलता है। आगे बात हुई कि इस पानी को तो सालभर पीने और अन्य कामों के लिए उपयोग में लाया जाता है, तो क्या इसमें कीड़े नहीं होते या ये गन्दा नहीं होता! इस प्रश्न पर बच्चों के अनुभव काफ़ी नए थे। मैं शायद इतनी कम उम्र के बच्चों से ऐसे अनुभवों की अपेक्षा नहीं कर रही थी। लगभग सभी बच्चों ने बताया कि वो कुएँ और झिरिया के पानी को साफ़ रखने के लिए ब्लीचिंग पाउडर और लाल दवा का उपयोग करते हैं। उन्होंने बताया कि इनको पानी में डालने से उसमें कीड़े नहीं पड़ते और पानी ख़राब नहीं होता।

ब्लीचिंग पाउडर और लाल दवा के बारे में मैंने पहली बार कक्षा 8 में विज्ञान की किताब में पढ़ा था। उनके बारे में ठीक से कक्षा 11 और 12 में समझा। पर यहाँ, प्राथमिक कक्षाओं के ये बच्चे यह सब अपने अनुभव से बता रहे हैं जो मेरे लिए बहुत नया था।

बच्चों से बातचीत करते-करते डेढ़ घण्टा कैसे बीता, पता ही नहीं चला। हर बच्चे के पास मुझे अचम्भित करने वाले ढेरों अनुभव थे। यहाँ उस चर्चा के केवल कुछ अंश हैं, बाक़ी जो इस बातचीत का आनन्द था, वो उस प्रक्रिया को करके ही महसूस किया जा सकता है।

इस सब बातचीत का अन्त हुआ बारिश के अनुभवों पर चित्र बनाकर। इसपर बच्चों ने सुन्दर चित्र बनाए।

शैक्षिक दृष्टि से समझने वाली बात

बच्चों के साथ की गई बारिश पर बातचीत से मैं कुछ बातें समझ पाई। जैसे–

- बारिश के मौसम को पसन्द-नापसन्द करने के बच्चों के आर्थिक आधार भी होते हैं। सबके लिए बारिश का मौसम सुहाना और हरा-हरा नहीं होता।
- यदि बच्चों के अनुभवों को कक्षा का हिस्सा बनाया जाए तो आसपास घट रही घटनाओं को देखने-समझने के उनके नज़रिए को समझा जा सकता है।
- कभी-कभी हमें लग सकता है कि बच्चे तय मुद्दे से भटक कर अपनी बातें रख रहे हैं। हमें बच्चों को टोके बिना उनकी बातों को सुनना चाहिए और उन्हें अपनी कक्षा की बातचीत में स्थान देना चाहिए।
- प्राथमिक स्तर पर बच्चों के रोज़मर्रा के अनुभव आगे की वैज्ञानिक अवधारणाओं को समझने के लिए नींव तैयार करते हैं। इसलिए इन्हें अपनी प्राथमिक कक्षाओं का हिस्सा बनाकर और निखारने की ज़रूरत है।

अभी तक के मेरे अनुभवों के आधार पर मुझे ये समझ आया कि शहरी परिवेश में पल रहे बच्चों की अपेक्षा ग्रामीण परिवेश में रह रहे बच्चों के अनुभव ज़्यादा व्यापक होते हैं, क्योंकि उनका परिवेश केवल घर की चारदीवारी, स्कूल भवन या गार्डन तक सीमित न होकर काफ़ी फैला हुआ होता है। साथ ही, उनके पास ख़ुद से करके या देखकर सीखने के अनेक मौक़े होते हैं। बस, हमें ज़रूरत है उन अनुभवों को सुनने और उन्हें अपनी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाने की।

शिफ़ा ख़ान ने डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर से रसायनशास्त्र में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की है। वे साल 2014 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में काम कर रही हैं। उनकी रुचि यात्राएँ करने, सूफ़ी संगीत सुनने, बच्चों को पढ़ाने और विज्ञान के इतिहास से जुड़ी सामग्री जानने-समझने में ज़्यादा है।

सम्पर्क : shifa.khan@azimpremjifoundation.org